16 जून 2017

संयुक्त राज्य अमेरिका और नाटो संबंध : कालातीत से गत्यात्मक की दिशा में

डॉ. स्तुति बनर्जी

उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) का गठन 1949 में हुआ जब वाशिंगटन संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे। आज यह उत्तरी अमेरिका और यूरोप से लेकर 28 देशों का सुरक्षा एलायेंस व गठबंधन है। नाटो का मूल प्रयोजन राजनीतिक और सैन्य साधनों के माध्यम से अपने सदस्यों की स्वतंत्रता और सुरक्षा की रक्षा करना है।

- **राजनीतिक- नाटो** लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देता है और रक्षा एवं सुरक्षा मुद्दों पर परामर्श और सहयोग को प्रोत्साहित करता है तथा चिरकालिक तक संघर्ष को रोकने के लिए विश्वासमत हासिल करता है।
- **मिलिटरी - नाटो** विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के लिए प्रतिबद्ध है। यदि राजनयिक प्रयास विफल होते हैं, तो इसके पास संकट-प्रबंधन कार्यों के लिए आवश्यक सैन्य क्षमता है। इन कार्यों को वाशिंगटन संधि - नाटो की संस्थापक संधि - के अनुच्छेद 5 के तहत या संयुक्त राष्ट्र के अधिदेश के तहत अकेले या अन्य देशों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के सहयोग से किया जाता है। नाटो संधि सदस्य देशों को सभी स्तरों पर और विभिन्न क्षेत्रों में सुरक्षा मुद्दों पर निर्णय लेने और परामर्श करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करती है। "नाटो निर्णय" का मतलब है सभी 28 सदस्य देशों की सामूहिक इच्छा की अभिव्यक्ति, क्योंकि सभी निर्णय सर्वसम्मति से लिए जाते हैं।

जब 4 अप्रैल, 1949 को नाटो के संस्थापक सदस्यों ने उत्तरी अटलांटिक संधि पर हस्ताक्षर किए, तब उसका एक मुख्य उद्देश्य पूर्व सोवियत संघ के विस्तार को रोकना तथा युद्ध की समाप्ति के बाद यूरोप के राजनीतिक एकीकरण को प्रश्रय देना था। नाटो सदस्य राष्ट्रों ने संयुक्त राष्ट्र के सिद्धांतों में अपना विश्वास जताया, जबकि “लोकतंत्र, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और कानून व्यवस्था के सिद्धांतों की स्थापना के अधार पर, अपने लोगों की स्वतंत्रता, साझी विरासत और सभ्यता की रक्षा करने के लिए दृढ़ संकल्प लिया। उनका उद्देश्य उत्तरी अटलांटिक क्षेत्र में स्थिरता और कल्याण को बढ़ावा देना है।" संधि के चौदह अनुच्छेदों का उद्देश्य सदस्य देशों को "... शांतिपूर्ण और मैत्रीपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के क्रमिक विकास की दिशा में योगदान देना” तथा संयुक्त राष्ट्र को मजबूत करना है।‘’ अनुच्छेद 2 में सदस्य देशों के लिए "... अपनी अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक नीतियों में टकराव को खत्म करने का प्रावधान किया गया है, जिससे नाटों सदस्य देशों के किसी या सभी देशों के बीच आर्थिक सहयोग प्रोत्साहित होगा।" जबकि अनुच्छेद 3 में कहा गया है, "इस संधि के उद्देश्यों को प्रभावकारी तरीके से प्राप्त करने के लिए, सदस्य देश अलग-अलग और संयुक्त रूप से, निरंतर और प्रभावकारी स्व-सहायता एवं पारस्परिक सहायता से सशस्त्र हमले का विरोध करने के लिए अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक क्षमता को कायम रखेंगे और उसे विकसित करेंगे।” यह उल्लेखनीय है कि, आर्थिक क्षेत्र सहित अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों को कम करने में भी संधि के अनुच्छेद 2 और 3 का एक एक महत्वपूर्ण प्रयोजन है।

सदस्य देशों ने खुद को "सामूहिक रक्षा और शांति एवं सुरक्षा के संरक्षण के लिए अपने प्रयासों को एकजुट करने की संकल्पना" की घोषणा की है। इन उद्देश्यों को सबसे बड़ा खतरा किसी दुश्मन शक्तिशाली देश द्वारा सैन्य हमले से था। अनुच्छेद 5 में संधि की सामूहिक रक्षा नीति की नींव है। इसमें कहा गया है, "पार्टियां इस बात से सहमत हैं कि यूरोप या उत्तरी अमेरिका में उनमें से एक या एक से अधिक देश के खिलाफ सशस्त्र हमले को सभी देशों के खिलाफ हमला माना जाएगा ...।" फिर भी, व्यक्तिगत या सामूहिक आत्मरक्षा के लिए इस तरह की कार्रवाई को संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के अनुच्छेद 51 द्वारा मान्यता प्राप्त है, लेकिन ऐसी कार्रवाई को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को भी सूचित किया जाना अपेक्षित है। इस अनुच्छेद में आगे यह भी कहा

गया है कि, "ऐसी कारवाइयां तब समाप्त की जाएंगी जब सुरक्षा परिषद अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बहाल करने और उसे बनाए रखने के लिए आवश्यक उपाय स्वयं करती है।"

लगभग सात दशकों में, यह गठबंधन/एलायेंस बदल गया है और इसी प्रकार अंतर्राष्ट्रीय वातावरण भी बदल गया है, जहां गठबंधन कार्य करता है। यह संभावना नहीं दिखाई देती है कि अमेरिका या यूरोप पारंपरिक सशस्त्र बलों के हमले का सामना करेंगे। समकालीन समय में गठबंधन के समक्ष चुनौतियाँ बड़े दायरे में हैं जिनमें पारंपरिक और गैर-पारंपरिक दोनों तरह के खतरें हैं, जैसे कि किसी देश के विभिन्न गुटों के भीतर संघर्ष, आतंकवाद, पाइरेसी, साइबर हमले और परमाणु प्रसार।

शीत युद्ध की समाप्ति के बाद के वर्षों में, गठबंधन ने वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय खतरों को दूर करने के लिए खुद को बदलने की कोशिश की है। जुलाई 1990 में लंदन में अपनी बैठक में, नाटो के राष्ट्राध्यक्षों और सरकारों ने यूरोप में नए तथा और भी अधिक आशाजनक युग को प्रतिबिंबित करने के लिए अटलांटिक एलायेंस को बदलने की आवश्यकता पर सहमति व्यक्त की। इसके परिणामस्वरूप, न्यू स्ट्रेटेजिक कॉन्सेप्ट 6 तैयार किया गया। इस दस्तावेज़ में कहा गया है, "यूरोप का राजनीतिक विभाजन, जो शीत युद्ध की अवधि के सैन्य टकराव का स्रोत था, का मुद्दा सुलझ चुका है।" पूर्ववर्ती पूर्वी ब्लॉक देशों में हुए परिवर्तनों का उल्लेख करते हुए, इसमें पश्चिम में हुए परिवर्तनों का भी उल्लेख किया गया था, जैसे कि जर्मनी का एकीकरण और यूरोपीय सुरक्षा को मजबूत करने के लिए यूरोपीय समुदाय का एक साथ आना। दस्तावेज़ में विभिन्न समझौतों का उल्लेख है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका और पूर्व सोवियत संघ के परमाणु बलों को कम करने सहित हथियार नियंत्रण सोच को बढ़ावा देता है।

दस्तावेज़ में सुरक्षा की ओर इशारा करते हुए यह कहा गया है कि "... सुरक्षा चुनौतियां और जोखिम, जो नाटो के सामने हैं, वे स्वरूप में भिन्न हैं अर्थात जैसे वे अतीत में थे, वैसे आज नहीं हैं। नाटो के सभी यूरोपीय देशों पर एक साथ व्यापक पैमाने पर हमले के खतरे को प्रभावकारी ढंग से समाप्त कर दिया गया है। इसलिए, मित्र देशों की एलाइड स्ट्रेटिजी पर अब अधिक फोकस करने की जरूरत नहीं है..." इसमें यह भी स्वीकार किया गया है कि, "मित्र देशों की सुरक्षा के जोखिम बहुआयामी और बहु-दिशात्मक हैं, जिनकी भविष्यवाणी और आकलन करना कठिन है। नाटो को ऐसे जोखिमों का जवाब देने में सक्षम होना होगा, यदि यूरोप में स्थिरता और गठबंधन सदस्यों की सुरक्षा को संरक्षित रखा जाना है।" इसमें इन खतरों की पहचान "... जातीय प्रतिद्वंद्विता और क्षेत्रीय विवादों सहित, गंभीर आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक कठिनाइयों से उत्पन्न अस्थिरताओं के प्रतिकूल परिणामों के रूप में की गई है, जिनका सामना मध्य और पूर्वी यूरोप में कई देशों द्वारा किया जाता है। .... हालांकि, इन मुद्दों से यूरोपीय स्थिरता के लिए संकट पैदा हो सकता है और यहां तक कि सशस्त्र संघर्ष हो सकते हैं, जिसमें बाहरी शक्तियां भी शामिल हो सकती हैं, या संघर्ष नाटो देशों में फैल सकते हैं, जिनका प्रभाव गठबंधन की सुरक्षा पर सीधा पड़ सकता है।" फिर भी, इसमें यह गौरतलब है कि "... गठबंधन सुरक्षा को वैश्विक संदर्भ में भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। गठबंधन सुरक्षा हित बड़े पैमाने पर परमाणु हथियारों का विनाश, महत्वपूर्ण संसाधनों के प्रवाह में व्यवधान और आतंकवाद एवं जानमाल के नुकसान सहित अन्य व्यापक जोखिमों से प्रभावित हो सकते हैं।" "...सोवियत सैन्य क्षमता और बिल्ड-अप क्षमता तथा उसके परमाणु आयाम अभी भी सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं, जिसके लिए गठबंधन को यूरोप में रणनीतिक संतुलन बनाए रखने हेतु ध्यान में रखना है..... शांति की रक्षा के लिए और युद्ध या किसी भी तरह के अवपीड़न को रोकने के लिए, एलायेंस निकट भविष्य में, यूरोप में परमाणु और पारंपरिक बलों का एक उपयुक्त मिश्रण स्थापित करेगा।" परमाणु बलों के स्वरूप पर विस्तार से उल्लेख करते हुए इसमें कहा गया है कि, "गठबंधन देशों के राष्ट्रों के परमाणु बलों का मूल उद्देश्य राजनीतिक है, अर्थात शांति बनाए रखना और अवपीड़न एवं किसी भी तरह के युद्ध को रोकना।" "संबंधित गठबंधन देशों ने फारवर्ड डिफेंस के सिद्धांत से एक रिड्यूस्ड फारवर्ड प्रेजेंस की दिशा में यथाआवश्यकता मूव करने तथा परमाणु हथियारों पर कम निर्भरता परिलक्षित करने हेतु फ्लेक्सिबल रिस्पोंस के सिद्धांत में संशोधन करने की सहमति जताई है।"

एलायंस की रणनीतिक संकल्पना (1999), जिसे वाशिंगटन डी. सी. में सदस्य देशों और उनकी सरकारों के प्रमुखों द्वारा अनुमोदित किया गया था, में जोर दिया गया है कि "गठबंधन निरंतर परिवर्तन के अनुरूप कार्य करेगा। ... इस उभरते संदर्भ के आलोक में, नाटो ने शीत युद्ध की समाप्ति के बाद यूरो-अटलांटिक सुरक्षा को मजबूत करने में आवश्यक भूमिका निभाई है। उसकी बढ़ती राजनीतिक भूमिका; रूस, यूक्रेन और भूमध्यसागरीय देशों के साथ संवाद सहित अन्य देशों के साथ उसकी राजनीतिक और सैन्य साझेदारी, सहयोग तथा बातचीत; नए सदस्यों को शामिल करने में उसकी निरंतर उदारवादिता; अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ उसका सहयोग; उसकी प्रतिबद्धता (जिसे शांति सहायता उपायों के माध्यम से संघर्ष को रोकने और संकट प्रबंधन में बाल्कन में देखा गया था), ये सभी मुद्दे नाटो की यूरो-अटलांटिक क्षेत्र की शांति और स्थिरता को एक आकार देने तथा उसके संवर्धन के प्रति दृढ़ संकल्प के सूचक हैं।" इसमें आगे कहा गया है, "रणनीतिक वातावरण में सकारात्मक विकासों के बावजूद और इस तथ्य के साथ कि एलायेंस के खिलाफ बड़े पैमाने पर पारंपरिक आक्रामकता की ज्यादा संभावना नहीं है, इस तरह के खतरे की संभावना दीर्घावधि में है.... गठबंधन के बाहर शक्तिशाली परमाणु बलों का अस्तित्व भी एक महत्वपूर्ण कारक है

जिसे एलायेंस को ध्यान में रखना है, अगर यूरो-अटलांटिक क्षेत्र में सुरक्षा और स्थिरता को बनाए रखा जाना है। "दस्तावेज़ में आगे कहा गया है, "गठबंधन को भविष्य में, यूरोप में परमाणु और पारंपरिक बलों का एक उपयुक्त मिश्रण स्थापित करना होगा।.... एलायंस के पारंपरिक बल अकेले अपेक्षित सुरक्षा सुनिश्चित नहीं कर सकते हैं। एलायेंस को नजरअंदाज करने और उसकी अनदेखी के खिलाफ आक्रामक जोखिमों का सामना करने में परमाणु हथियारों का एक अनूठा योगदान हो सकता है। इस प्रकार, परमाणु हथियार शांति बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं।"

2010 के कॉन्सेप्ट डॉक्यूमेंट में "...नाटो से परमाणु हथियारों के बिना एक दुनिया सृजित करने की प्रतिबद्धता देने की अपेक्षा की गई है - लेकिन इसमें यह भी पुष्टि की गई है कि जब तक दुनिया में परमाणु हथियार हैं, तब तक नाटो एक परमाणु गठबंधन बना रहेगा।" इसमें उल्लेख किया गया है कि "परमाणु हथियारों के प्रसार और बड़े पैमाने पर अन्य हथियारों का विनाश तथा उनकी डिलीवरी के साधन वैश्विक स्थिरता और समृद्धि के लिए अकल्पनीय परिणाम दे सकते हैं। अगले दशक के दौरान, परमाणु प्रसार दुनिया के कुछ सबसे अस्थिर क्षेत्रों में तेज गति से होगा। आतंकवाद नाटो देशों और अंतर्राष्ट्रीय स्थिरता एवं व्यापक समृद्धि हेतु नागरिकों की सुरक्षा के लिए एक सीधा खतरा है, खासकर...आधुनिक प्रौद्योगिकी से आतंकवादी हमलों के संभावित खतरे और जोखिम बढ़ गए हैं, विशेष रूप से अगर आतंकवादी परमाणु, रासायनिक, जैविक या रेडियोलॉजिकल सक्षमताएं हासिल कर लेते हैं! "मित्र राष्ट्रों की सुरक्षा की सर्वोच्च गारंटी गठबंधन की रणनीतिक परमाणु बलों द्वारा प्रदान की जाती है ..."वॉरसॉ शिखर सम्मेलन कम्युनिके (2016) में परमाणु गठबंधन के रूप में नाटो की नीति को जारी रखने की बात की गई है। इसमें कहा गया है कि "संघर्ष और युद्ध को रोकने के लिए, विश्वसनीय निरोध और रक्षा आवश्यक है। इसलिए, परमाणु, पारंपरिक और मिसाइल रक्षा क्षमताओं के एक उपयुक्त मिश्रण के आधार पर, रक्षा और सुरक्षा हमारी समग्र रणनीति का एक मूलभूत तत्व बनी हुई हैं। ... नाटो को अपनी रणनीति को सुरक्षा वातावरण के रुझानों के अनुरूप ढालना जारी रखना चाहिए ... ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि नाटो का समग्र निरोध और रक्षा स्वरूप संभावित दुश्मनों के सिद्धांतों और सक्षमताओं से निपटने में सक्षम है, और वह विश्वसनीय, लचीला, उदारवादी तथा संगत है।"

उत्तरी अटलांटिक क्षेत्र की रक्षा के लिए रणनीतिक संकल्पना (1949) में सदस्य देशों से कहा गया है कि, "परमाणु बम के शीघ्र वितरण सहित वे रणनीतिक बमबारी करने की क्षमता हासिल करें। यह मुख्य रूप से अमेरिका की जिम्मेदारी है जिसमें अन्य देशों द्वारा व्यावहारिक रूप से सहायता प्रदान की जाती है।" यह अनुमान लगाया गया कि सोवियत संघ यूरोप में, भविष्य में, एक बड़ा युद्ध आश्चर्यजनक ढंग से शुरू कर देगा जिसमें बड़े पैमाने पर परमाणु हथियारों का आदान-प्रदान होगा और नाटो के परमाणु हथियारों के उपयोग को सीमित नहीं रखा जाएगा, अगर सोवियत पहले परमाणु हथियार का इस्तेमाल करता है। इस प्रकार नाटो की सैन्य समिति ने नाटो के सैन्य अधिकारियों को "योजना बनाने के लिए अधिकृत करने और इस धारणा पर तैयारी करने के लिए कहा कि रक्षा हेतु परमाणु और थर्मो-परमाणु हथियारों का शुरुआत में उपयोग किया जाएगा।" नाटो की परमाणु नीति इस तथ्य पर आधारित थी कि परमाणु हथियार एलायेंस के परमाणु देशों या परमाणु साझाकरण व्यवस्था के गैर-परमाणु हथियारों के क्षेत्र पर आधारित होंगे। एलायेंस "अपने रणनीतिक परमाणु बलों, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका; यूनाइटेड किंगडम और फ्रांस की स्वतंत्र सामरिक परमाणु बलों पर निर्भर है। इनकी अपनी एक अलग भूमिका है और वे गठबंधन देशों की समग्र सुरक्षा में योगदान करते हैं।" न्यूक्लियर प्लानिंग ग्रुप (एनपीजी) की स्थापना दिसंबर 1966 में हुई थी ताकि नाटो के भीतर परमाणु सिद्धांत पर एक परामर्शी प्रक्रिया स्थापित की जा सके। यह नाटो की एक महत्वपूर्ण समिति है। परमाणु हथियार एलायंस के लिए, एक निवारक के रूप में, अनोखी और विशिष्ट भूमिका निभाते हैं। उनकी भूमिका बड़े युद्धों को रोकने की है, न कि युद्ध छेड़ने की।

1990 के दशक के दौरान, नाटो गठबंधन ने सोवियत संघ और वॉरसॉ संधि की समाप्ति को परिलक्षित करने के लिए अपनी परमाणु रणनीति को बदल दिया, लेकिन उसने परमाणु का पहले इस्तेमाल या "नो-फर्स्ट यूज" नीति भी नहीं अपनाई। 2009 के बाद, नाटो ने न तो न्यूक्लियर फर्स्ट-यूज़ और न ही नो-फर्स्ट-यूज़ पॉलिसी का पालन किया। गठबंधन पहले से यह तय नहीं करता है कि आक्रमण की स्थिति में वह कैसे प्रतिक्रिया करेगा। इसलिए यह प्रश्न अभी भी यथावत है, और इसका उत्तर तभी मिलेगा जब कोई आक्रमण जैसी स्थिति घटित होती है। नाटो की यह रणनीति का उद्देश्य आक्राता के मन में अनिश्चितता पैदा करना है कि उसकी आक्रमकता क्या होगी। वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय सामरिक वातावरण में, मित्र राष्ट्रों ने घोषणा की है कि जिन परिस्थितियों में उन्हें किसी भी प्रकार के परमाणु हथियारों के उपयोग पर विचार करना पड़ सकता है, ऐसी स्थिति अभी दूर-दूर तक नहीं दिखाई देती है। इस सोच के साथ कि क्या गठबंधन और यूरोप को परमाणु हथियारों की जरूरत है, इस पर अब सवाल करना ठीक नहीं है, खासकर जब से परमाणु हथियारों की संख्या कम करने के लिए एलायेंस ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। एलायेंस ने एक ऐसा फार्मूला भी विकसित किया है जिससे यह महसूस होता है कि नाटो के नए सदस्य देशों को परमाणु हथियार तैनात करने की कोई आवश्यकता पड़ेगी या उन्हें उसके लिए कोई योजना बनानी पड़ेगी।

गठबंधन अब यूरोप के लिए परमाणु सुरक्षा से परे अपनी भूमिका का विस्तार कर रहा है। सामरिक दस्तावेज (1999) में कहा गया है, गठबंधन "... संघर्ष को प्रभावकारी रूप से रोकने में योगदान देगा और संकट की स्थितियों में राहत पहुंचाने के कार्यों सहित संकट प्रबंधन में सक्रिय रूप से भूमिका निभाएगा। अपनी महता को और अधिक परिभाषित करने के लिए, नाटो मध्य पूर्व में आतंकवाद-रोधी अभियानों में, अफ्रीका के तट पर समुद्री डकैती रोधी अभियानों में शामिल हुआ। 1994 में, एलायेंस ने मेडिटेरेनियन डॉयलॉग स्थापित किया, जिसका उद्देश्य बेहतर आपसी समझ के जरिए भूमध्य सागर में सुरक्षा और स्थिरता में योगदान करना है। नाटो ने 'आउट ऑफ एरिया ऑपरेशंस' में भी भाग लेना शुरू कर दिया है जिसका उदाहरण बाल्कन संकट के दौरान उसकी प्रतिभागिता है। नाटो ने युद्ध अपराधों को समाप्त करने के लिए संयुक्त राष्ट्र के प्रयासों में अपना पूर्ण समर्थन दिया, जिसमें एक नौसैनिक के रूप में प्रत्यक्ष सैन्य कार्रवाई भी शामिल है। नो-फ्लाई ज़ोन के प्रवर्तन में आने के शीघ्र बाद उन देशों पर भारी हवाई हमले किए गए थे जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र के प्रस्तावों का उल्लंघन किया था। एलायेंस ने सितंबर 1995 में नौ दिनों का एक हवाई अभियान चलाया जिसने संघर्ष को समाप्त करने में प्रमुख भूमिका निभाई। उस वर्ष के दिसंबर माह में, नाटो ने डेटन शांति समझौते को लागू करने और स्वमेय-शांति स्थापित करने के लिए परिस्थितियां सृजित करने में सहायता करने हेतु संयुक्त राष्ट्र के अधिदेश के अनुसार 60,000 सैनिकों की बहुराष्ट्रीय सेना तैनात की। अफगानिस्तान में, तालिबान शासन को उखाड़ फेंकने के बाद, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव 1386 ने नाटो को काबुल में और उसके आसपास एक बहुपक्षीय बल, अर्थात अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा और सहायता बल (आईएसएएफ) की तैनाती के लिए अधिकृत किया ताकि अफगानिस्तान में स्थिरता लाने और स्वमेय शांति बहाल करने वाली स्थिति सृजित करने में मदद मिल सके। अगस्त 2003 में, नाटो ने आईएसएफ की कमान और समन्वय का कार्यभार संभाला। 2004 में नाटो ने अपने मिशन से हटकर इराक में ही इराकी सैनिकों को तथा क्षेत्र में अन्य देशों के सैनिकों को प्रशिक्षण देने की अतिरिक्त जिम्मेदारी निभाई। नाटो ने, गठबंधन के मुख्य कार्य के रूप में, साइबर रक्षा को भी अपने दायित्व में शामिल किया है। प्रस्ताव को वारसा शिखर सम्मेलन (2014) में स्वीकार किया गया था। नाटो की शीर्षतम प्राथमिकता संचार तंत्रों का संरक्षण करना है, जिनका स्वामित्व और संचालन एलायेंस द्वारा किया जा रहा है।

आज, नाटो नई सुरक्षा चुनौतियों से निपटने में न केवल स्वयं को प्रभावकारी बने रहने के लिए, बल्कि अपने गठबंधन के सदस्यों को भी प्रभावकारी बने रहने के लिए खुद को विकसित कर रहा है। यूरोप के लिए, नाटो सुरक्षा का एक स्रोत है और उसे हार्ड पावर के रूप में माना जाता है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए नाटो शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका की अन्य देशों के साथ भागीदारी स्थापित करने का अवसर प्रदान करता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका और नाटो

संयुक्त राज्य अमेरिका एलायेंस का एक संस्थापक सदस्य है, जो एलायेंस के लिए संधि को आकार देने में मदद करता है। उसकी प्रतिबद्धता केवल राजनीतिक नहीं है, अपितु यह एक अग्रिम समझौता है कि किसी भी नाटो सदस्य देश पर किए गए हमले का मतलब संयुक्त राज्य अमेरिका पर हमला है। उसके पास व्यावहारिक सैन्य आयाम हैं - संयुक्त राज्य अमेरिका के पास यूरोप में पर्याप्त बल कायम रखने और एक बहुराष्ट्रीय सैन्य कमान का नेतृत्व करने का अधिदेश है। समझौते में अमेरिका को महाद्वीप के भीतर राजनीतिक एकीकरण में सहायता करने की भी अनुमति दी गई है। शीत युद्ध के दौरान नाटो, अमेरिकी विदेश और सुरक्षा नीति का एक केंद्र बिंदु रहा है।

नाटो के संबंध में संयुक्त राज्य अमेरिका के मिशन के अनुसार, संयुक्त राज्य अमेरिका गठबंधन में क्यों है, इसका कारण है "एक राजनीतिक और सैन्य गठबंधन के रूप में, हम (अमेरिका और नाटो) नाटो में जो भी एक साथ करते हैं, उससे संयुक्त राज्य अमेरिका और गठबंधन के हर देश के लोगों की सुरक्षा, समृद्धि और स्वतंत्रता में सीधे योगदान होता है। (यूएस') नाटो लिंक ठोस हैं, जिसे 60 साल पहले स्थापितकिया गया था। ....नाटो के इतिहास में, अनुच्छेद 5 को सिर्फ एक बार लागू किया गया है, जब संयुक्त राज्य अमेरिका में 9/11 आतंकवादी हमला हुआ था।" आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ने के लिए ही गठबंधन किया गया है।

अपने रणनीतिक दिशानिर्देश दस्तावेज (2012) शीर्षक "सस्टेनिंग यूएस ग्लोबल लीडरशिप : 21वीं शताब्दी की रक्षा के लिए प्राथमिकताएं" में यह उल्लेख किया गया है कि "वैश्विक सुरक्षा वातावरण निरंतर जटिल चुनौतियां और अवसर पेश कर रहा है जिसके लिए अमेरिकी राष्ट्र शक्ति के सभी घटकों का प्रयोग किया जाना होगा। ..... निकट भविष्य में, संयुक्त राज्य अमेरिका दुनियाभर में गैर-देशीय खतरों की गतिविधियों की निगरानी कर, इन खतरों का मुकाबला करने के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण जारी रखेगा, और अपने सहयोगियों और भागीदारों के साथ मिलकर कार्य करता रहेगा ताकि अशासित क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित किया जा सके तथा आवश्यकता पड़ने पर सबसे खतरनाक समूहों और व्यक्तियों पर सीधे प्रहार किया जा सके।" दस्तावेज़ में आतंकवाद और अनियमित युद्ध के खिलाफ, अमेरिकी सशस्त्र बलों के प्राथमिक मिशन के रूप में, मिशन स्थापित

किए जाने का भी उल्लेख किया गया है। इसमें कहा गया है, "संयुक्त राज्य अमेरिका यूरोप में शांति और समृद्धि में सपोर्ट देने के साथ-साथ नाटो की ताकत और प्रभावकारिता को बढ़ाने की भी इच्छा रखता है, जो कि यूरोप और उससे परे की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। .....संयुक्त राज्य अमेरिका हमारी अनुच्छेद 5 की प्रतिबद्धताओं को कायम रखेगा, जो सदस्य देशों की सुरक्षा से संबंधित है, और गठबंधन संचालनों के लिए संवर्धित क्षमता एवं पारस्परिकता को बढ़ावा देगा। इस संसाधन-अभाव वाले युग में, हम 21वीं सदी में नाटो एलाइज के साथ भी कार्य करेंगे ताकि 21वीं सदी की चुनौतियों की पूर्ति के लिए नाटो सहयोगियों के साथ मिलकर 'स्मार्ट डिफेंस` दृष्टिकोण विकसित कर सके और सक्षमताओं को संग्रहित, साझा विशेषीकृत किया जा सके। इसके अलावा, रूस के साथ हमारा जुड़ाव महत्वपूर्ण है, और हम आपसी हित के क्षेत्रों में घनिष्ठ संबंध बनाना जारी रखेंगे तथा इस संबंध को व्यापक मुद्दों पर योगदानकर्ता के रूप में प्रोत्साहित करेंगे।

चुनावों के दौरान, एक उम्मीदवार के रूप में, राष्ट्रपति ट्रम्प (वाशिंगटन पोस्ट [21 मार्च 2016] के संपादकीय बोर्ड के साथ एक बैठक में) ने कहा था, "नाटो में अमेरिका की भागीदारी आने वाले वर्षों में काफी कम हो सकती है, जो वाशिंगटन में हस्ताक्षरित लगभग सात दशकों के चली आ रही कॉमन सहमति से नाता तोड़ने की ओर इशारा है।" उन्होंने कहा, "नाटो की स्थापना अलग समय पर हुई थी। नाटो की स्थापना तब हुई जब हम एक अमीर देश थे। अब हम एक अमीर देश नहीं हैं। हम उधार ले रहे हैं, हम यह सारा पैसा उधार ले रहे हैं। ...नाटो से हम पर खर्च का बोझ बढ़ रहा है। हाँ, हम यूरोप की रक्षा कर रहे हैं, लेकिन हम बहुत पैसा खर्च कर रहे हैं। नंबर 1, मुझे लगता है कि लागत के वितरण में संशोधन करना होगा। मुझे लगता है कि नाटो, एक अवधारणा के रूप में, अच्छा है, लेकिन यह उतना अच्छा नहीं है जितना यह पहली बार स्थापित करने के समय पर था। और मुझे लगता है, आप जानते हैं, हम न केवल आर्थिक रूप से इस बोझ का वहन कर रहे हैं, बल्कि हम इसके सबसे बड़े हिस्से का वहन कर रहे हैं।"

द न्यूयॉर्क टाइम्स (26 मार्च 2016) को दिए गए अपने साक्षात्कार में उन्होंने कहा, "... नाटो को लेकर मेरी दो समस्याएं हैं। नंबर 1, यह बहुत प्राचीन अर्थात कालातीत हो गया है। जब नाटो का गठन कई दशक पहले हुआ था तब हम एक अलग देश थे। उस समय पर अलग किस्म का खतरा था। सोवियत संघ, सोवियत संघ था, न कि रूस, जो रूस से बहुत बड़ा था, जैसा कि आप जानते हैं। और, वह निश्चित रूप से आज के रूस की तुलना में बहुत अधिक शक्तिशाली था, हालांकि, आप हथियारों की दृष्टि से उसका पुन: आकलन कर सकते हैं। लेकिन, मुझे लगता है कि नाटो कालातीत हो चुका है, और मुझे लगता है कि हम में से कोई भी आतंकवाद की ओर नहीं देख रहा हैं, जबकि हमें आतंकवाद पर गंभीरता से देखना चाहिए, क्योंकि आज आतंक बड़ा खतरा है। आज आतंकवाद की घटनाएं अलग-अलग हिस्सों में सब जगह हो रही हैं। आप जानते हैं कि अतीत में सैनिकों के पास वर्दी होती थी और युद्ध में आप पहचान पाते थे कि आपका दुश्मन कौन होता था। आज हमें पता नहीं लगता है कि दुश्मन कौन है।" उन्होंने आगे कहा," मैं आपको बताता हूं। नाटो के साथ मेरी क्या समस्याएँ हैं। नंबर 1, हम बहुत अधिक भुगतान करते हैं। ... नाटो हमारे लिए अर्थात संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए आर्थिक रूप से तर्कसंगत नहीं है। वास्तव में संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना में नाटो को अधिक फायदा मिलता है और हम एक अतुलनीय अंश का भुगतान करते हैं। ... तो नाटो आज के बजाय पूर्व में उत्कृष्ट था। आज इसे बदलना होगा। इसमें आतंक को शामिल करने के लिए इसे बदलना होगा। इसे लागत के दृष्टिकोण से बदलना होगा क्योंकि संयुक्त राज्य अमेरिका नाटो की लागत का बहुत अधिक वहन करता है।"

विस्कॉन्सिन में एक रैली के दौरान उन्होंने अपनी आलोचना को दोहराया कि अन्य नाटो देश संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना में "अपने उचित हिस्से का भुगतान नहीं कर रहे हैं"। "इसका मतलब है कि हम उनका संरक्षण कर रहे हैं, उन्हें सैन्य सुरक्षा और अन्य चीजें मुहैया करा रहे हैं, और वे संयुक्त राज्य अमेरिका से फायदा उठा रहे हैं। आप जानते हैं, हम क्या कर सकते हैं? कुछ भी नहीं" श्री ट्रम्प ने मिल्वौकी के बाहरी इलाके में एक रैली में कहा "या तो उन्हें पिछली विसंगतियों के लिए भुगतान करना होगा या उन्हें बाहर निकलना होगा।" उन्होंने कहा "अगर वे नाटो को तोड़ना चाहते है, तो तोड़ें।" राष्ट्रपति चुनाव जीतने के बाद श्री ट्रम्प ने द टाइम्स एंड बिल्ड (16 जनवरी 2017) को अपने साक्षात्कार में कहा कि, "मैंने बहुत पहले कहा था कि नाटो को लेकर उनकी कुछ शिकायतें हैं। ... मुझे दो दिनों तक इस बारे में बहुत आक्रोश झेलना पड़ा। और फिर उन्होंने कहना शुरू कर दिया कि ट्रम्प सही हैं - और अब ... वे आतंक के खिलाफ लड़ने के लिए पूर्ण रूप से समर्पित हैं, जो अच्छा है। .... जो भी कहा गया है, नाटो मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है।"

मैकडिल एयर फोर्स बेस (ताम्पा, फ्लोरिडा, 06 फरवरी 2017) के उद्घाटन के बाद उन्होंने कहा कि, "हम नाटो का पुरजोर समर्थन करते हैं। हम केवल यह बात कर रहे हैं कि नाटो के सभी सदस्य नाटो गठबंधन के लिए अपना पूर्ण और उचित वित्तीय योगदान दें, जैसा कई सदस्य देश नहीं कर रहे हैं। उनमें से कई सदस्य देशों ने तो आर्थिक रूप से बहुत ही कम योगदान दिया है। उन्हें अपने हिस्से का पूरा आर्थिक योगदान देना होगा।" उनकी टिप्पणियों को यूरो-अटलांटिक गठबंधन साझेदारी के बीच की दूरी के रूप में देखा गया है। जर्मन की अपनी यात्रा के दौरान श्री ट्रम्प ने जर्मन चांसलर एंजेला मर्केल के साथ मुलाकात

कर ट्विटर पर टिप्पणी की "... मेरी इस संबंध में जर्मन चांसलर एंजेला मर्केल के साथ बहुत ही अच्छी बैठक हुई। फिर भी, जर्मनी पर भी अभी नाटो को दी जाने वाली बड़ी रकम बकाया है और जर्मनी को शक्तिशाली, बहुत ही खर्चीली रक्षा मुहैया कराने के लिए उसे संयुक्त राज्य अमेरिका को और अधिक भुगतान करना चाहिए।" (@RealDonaldTrump, 18 मार्च 2017)। संयुक्त राष्ट में नाटो के पूर्व राजनयिक, श्री इवो डालडेर ने श्री ट्रम्प की टिप्पणियों का विरोध किया था। अपने अनेक ट्वीट्स में इवो डालडेर ने कहा कि, "यह नाटो के कार्य करने का तरीका नहीं है। अमेरिका खुद तय करे कि नाटो की सुरक्षा के लिए उसका योगदान क्या है। ... जो वर्तमान में रक्षा पर अपने सकल घरेलू उत्पाद का 2% खर्च नहीं कर रहे हैं, वे अब अपने रक्षा बजट में वृद्धि कर रहे हैं। ... अमेरिका नाटो को बड़ी सैन्य प्रतिबद्धता प्रदान करता है। लेकिन यह यूरोप पर कोई मेहरबानी नहीं है। यह हमारी अपनी सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।" (@IvoHDaalder 18 मार्च 2017)।

तथापि, ऐसा लगता है कि राष्ट्रपति गठबंधन पर अपनी आलोचना की समीक्षा कर रहे हैं। म्यूनिक सुरक्षा सम्मेलन (18 फरवरी 2017) में उपाध्यक्ष माइक पेंस ने कहा, "आज, राष्ट्रपति ट्रम्प की ओर से, मैं आपको यह आश्वासन देता हूं कि संयुक्त राज्य अमेरिका नाटो का पुरजोर समर्थन करता है और इस ट्रान्साटलांटिक गठबंधन के प्रति हमारी प्रतिबद्धता में अटूट विश्वास कायम रहेगा।" नाटो महासचिव जेन स्टोलटेनबर्ग के साथ एक संयुक्त बयान (12 अप्रैल 2017) में राष्ट्रपति ट्रम्प ने कहा कि, "... नाटो आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में और क्या कर सकता है। मैंने बहुत समय पहले नाटो के प्रति एक शिकायत की थी और उन्होंने उसमें बदलाव किया है, और अब वे आतंकवाद से लड़ने के लिए तत्पर हैं। मैंने कहा कि नाटो प्राचीन हो गया है, लेकिन वह लंबे समय तक प्राचीन बनकर नहीं रहेगा।" यह स्पष्ट करने के लिए कि उन्हें ऐसा क्यों लगा कि नाटो अब प्राचीन नहीं है, राष्ट्रपति ट्रम्प ने एसोसिएटेड प्रेस को अपने साक्षात्कार में (23 अप्रैल 2017) कहा, जब उन्होंने नाटो को प्राचीन हो जाने के बारे में कहा था तो उन्हें नाटो के बारे में ज्यादा पता नहीं था। तथापि, उन्होंने स्पष्ट किया कि उन्हें लगा कि नाटो इसलिए प्राचीन लगता था क्योंकि वह आतंकवाद जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित नहीं करता था। उन्होंने आगे कहा कि वह गठबंधन के अन्य सदस्यों पर *'पुरजोर तरीके से'* गठबंधन को अपने अंश की *'लागत'* चुकाने की बात कहते रहेंगे।

पिछले कई वर्षों से आंतरिक टकरावों से 'खतरों' और संसाधनों' के मुद्दों पर गठबंधन के भीतर काफी मतभेद पैदा हुए हैं। खतरों के बारे में तर्क-वितर्क रूस के संबंध में नीति से लेकर गैर-पारंपरिक खतरों की वैधता तक हैं। संसाधनों के बारे में तर्क-वितर्क अफगानिस्तान में नाटो के आईएसएएफ मिशन के लिए क्षमता के अभाव से लेकर राष्ट्रीय रक्षा खर्च के अपर्याप्त स्तर के दायरे तक हैं। सदस्य देश नाटो को चलाने और उसकी नीतियों और गतिविधियों को लागू करने की लागत में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष योगदान देते हैं। 2006 में, नाटो सदस्य देशों ने रक्षा पर खर्च करने के लिए अपने सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का न्यूनतम दो प्रतिशत देने की सहमति व्यक्त की थी। इस दिशानिर्देश ने एलायंस के कॉमन रक्षा प्रयासों में योगदान देने में मुख्य रूप से देश की राजनीतिक इच्छाशक्ति के एक संकेतक के रूप में कार्य किया। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक सदस्य देश की रक्षा क्षमता का प्रभाव एक राजनीतिक-सैन्य संगठन के रूप में गठबंधन की विश्वसनीयता की समग्र अवधारणा पर महत्वपूर्ण है। यद्यपि संयुक्त राज्य अमेरिका सभी कार्यों की लागत को कवर नहीं करता है, पर इसका मतलब यह नहीं है कि खुफिया, निगरानी और प्राथमिक आक्रमण के सर्वेक्षण; हवा से हवा में ईंधन भरने; बैलिस्टिक मिसाइल रक्षा; और एयरबोर्न इलेक्ट्रॉनिक युद्ध सहित मूलभूत सक्षमताओं के प्रावधान के लिए गठबंधन कुल मिलाकर संयुक्त राज्य अमेरिका पर ज्यादा-निर्भर है। नाटो के 28 सदस्यों में से केवल पांच - अमेरिका, ग्रीस, पोलैंड, एस्टोनिया और यू.के. अपने जीडीपी के निर्धारित 2 प्रतिशत लक्ष्य की पूर्ति कर नाटो में योगदान देते हैं। यह एक असंतुलन है जिसे राष्ट्रपति ट्रम्प ठीक करना चाहते हैं। उन्होंने तर्क दिया है कि संयुक्त राज्य अमेरिका अपनी सेना को अपग्रेड करेगा, लेकिन उसे संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रीय हितों की रक्षा भी करनी होगी। उनके राष्ट्रपति काल में संयुक्त राज्य अमेरिका सत्ता परिवर्तन में रुचि नहीं रखेगा। वह चाहेंगे कि यूरोपीय राष्ट्र क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए जिम्मेदारी लें। इसका मतलब यह नहीं है कि संयुक्त राज्य अमेरिका खुद को पीछे रखेगा, इसका मतलब यह होगा कि वह संकट की स्थिति में 'अग्रणी भूमिका' निभाना पसंद नहीं करेगा। राष्ट्रपति ट्रम्प का यह विचार सऊदी अरब में अरब इस्लामिक अमेरिका शिखर सम्मेलन (21 मई 2017) के प्रतिनिधियों को उनके संबोधन से स्पष्ट हो गया था। उन्होंने कहा, "अमेरिका एक संप्रभु राष्ट्र है और हमारी पहली प्राथमिकता हमेशा हमारे नागरिकों की सुरक्षा और संरक्षा है। .... अमेरिका साझा हितों और सामान्य सुरक्षा की तलाश में आपके साथ खड़े होने के लिए तैयार है। लेकिन मध्य पूर्व के राष्ट्रों को अपने दुश्मनों को कुचलने के लिए अमेरिकी शक्ति की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।"

राष्ट्रपति ट्रम्प ने मैनचेस्टर आतंकवादी हमले (24 मई 2017) के बाद ब्रसेल्स (25 मई 2017) में नाटो नेताओं के प्रथम शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि गठबंधन को *'इस्लामी'* आतंकवाद की चुनौती से निपटने की आवश्यकता है। नाटो में अपने भाषण 'अनुच्छेद 5 और बर्लिन वाल मेमोरियल का अनावरण' में उन्होंने अपना रुख दोहराया कि, "भविष्य के नाटो में आतंकवाद और आव्रजन पर व्यापक ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए, जिसमें रूस और नाटो की पूर्वी और दक्षिणी सीमाओं पर

खतरे भी शामिल हैं।" गठबंधन द्वारा जिन मुद्दों पर ध्यान दिया जाना चाहिए उसमें आव्रजन सहित अन्य मुद्दों पर उनकी टिप्पणी आतंकवाद पर ध्यान केंद्रित करने के अतिरिक्त थी। उन्होंने यह भी दोहराया, "नाटो के सदस्यों को अंततः अपने उचित हिस्से का योगदान देना चाहिए और अपने वित्तीय दायित्वों को पूरा करना चाहिए। 28 सदस्यों में से 23 सदस्य अभी भी उस स्तर का भुगतान नहीं कर रहे हैं जैसा उन्हें अपनी सुरक्षा की एवज में करना चाहिए था। यह संयुक्त राज्य अमेरिका के लोगों और करदाताओं के लिए ठीक नहीं है। सदस्य देशों में से कई देशों पर पिछले वर्षों से बड़े पैमाने पर भुगतान का बकाया है क्योंकि उन्होंने गत वर्षों में भुगतान नहीं किया था। पिछले आठ वर्षों में, संयुक्त राज्य अमेरिका ने अन्य सभी नाटो देशों की तुलना में रक्षा पर अधिक खर्च किया। यदि पिछले वर्ष सभी नाटो सदस्यों ने रक्षा पर अपने सकल घरेलू उत्पाद का केवल 2 प्रतिशत खर्च किया होता, तो हमारे सामूहिक रक्षा के लिए नाटो भंडार में हमारे पास $ 119 बिलियन डॉलर का और अतिरिक्त वित्तपोषण उपलब्ध होता।" फिर भी, उनके भाषण ने आर्टिकल 5 का कोई उल्लेख या सीधे पृष्ठांकन नहीं किया, जिसे न्यूयॉर्क में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमलों के बाद पहली बार लागू किया गया था। उन्होंने नाटो के नए मुख्यालय के स्थल पर एक समारोह में बर्लिन वाल के दो हिस्सों (जिससे 1989 तक जर्मन शहर विभाजित था) के निकट विश्व व्यापार केंद्र के उत्तरी टॉवर के स्टील बीम के एक भाग का अनावरण किया। हालांकि, नाटो मुख्यालय (फरवरी 2017) में अपनी यात्रा से पहले रक्षा महासचिव जेम्स मैटिस ने अपनी टिप्पणी में कहा कि "गठबंधन संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए तथा सभी ट्रांसलेंटिक समुदाय के लिए एक बुनियादी आधार है, जिससे हम बंधे हुए हैं। जैसा कि राष्ट्रपति ट्रम्प ने कहा है, उनका नाटो को मजबूत समर्थन है।" उन्होंने म्यूनिक सुरक्षा सम्मेलन में यह भी कहा, "वारसॉ में हस्ताक्षरित नाटो-ई.यू.संयुक्त घोषणा इस वास्तविकता को दर्शाती है कि अमेरिकी सुरक्षा स्थायी रूप से यूरोप की सुरक्षा से जुड़ी है।" अमेरिका के विदेश मंत्री श्री रेक्स टिलरसन ने भी मार्च 2017 में नाटो के विदेश मंत्रियों की वार्ता के दौरान इसी तरह के विचार व्यक्त किए थे। उन्होंने कहा था, "नाटो के प्रति अमेरिका की प्रतिबद्धता मजबूत है और यह एलायंस ट्रान्सअटलांटिक सुरक्षा के लिए एक आधार है। संयुक्त राज्य अमेरिका यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि नाटो के पास हमारी सामूहिक रक्षा का सपोर्ट करने की क्षमता है। हम समझते हैं कि हम में से किसी एक के खिलाफ कोई भी खतरा हम सभी के खिलाफ खतरा है, और हम उसी के अनुसार जवाबी कार्रवाई करेंगे। हम अपने सहयोगियों की रक्षा के लिए किए गए समझौतों पर खरे उतरेंगे।"

यूरोप में, नाटो महासचिव जेन्स स्टोलटेनबर्ग ने कहा, "हमने राष्ट्रपति ट्रम्प के उस सपाट बोल को पहले भी देखा-सुना है।" प्रेस सचिव सीन स्पाइसर ने कहा कि गठबंधन के लिए पुन:समर्थन देने की कोई आवश्यकता नहीं थी क्योंकि यह तो गठबंधन के संबंध की मूल नींव थी। इसे एनएसए एचआर मैकमास्टर और श्री गैरी कोहेन द्वारा द वॉल स्ट्रीट जर्नल (30 मई 2017) के एक अनुच्छेद में दोहराया गया था, जहां उन्होंने कहा था कि, "नाटो हमारी... प्रतिबद्धताओं में निहित है ... जो हमें एक साथ बांधती है। नाटो और अनुच्छेद 5 के लिए अमेरिका की प्रतिबद्धता की फिर से पुष्टि करते हुए, राष्ट्रपति ने हमारे सहयोगियों को चुनौती दी कि वे हमारे आपसी बचाव के लिए समान रूप से जिम्मेदारी साझा करें।" राष्ट्रपति ट्रम्प ने आपसी माहौल को संगत बनाने के लिए एक प्रेस कॉन्फ्रेंस (जून 2017) में कहा कि "मैं संयुक्त राज्य अमेरिका की ओर से प्रतिबद्धता व्यक्त करता हूं, जैसा हम करते आए हैं, लेकिन मैं अनुच्छेद 5 के बारे में संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रतिबद्धता की पुष्टि कर रहा हूं। और निश्चित रूप से हम उसको संरक्षित करेंगे। यह एक कारण है कि मैं चाहता हूं कि लोगों को सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे पास एक बहुत ही मजबूत बल है और हमारे पास उतना आवश्यक धन उपलब्ध होना चाहिए जितना कि इए बल को अनुरक्षित करने के लिए अपेक्षित हो। हाँ, निश्चित रूप से, मैं अनुच्छेद 5 के लिए प्रतिबद्ध हूँ।"

निष्कर्ष

अपने राष्ट्रपति चुनाव अभियान के दौरान राष्ट्रपति ट्रम्प के "अमेरिका फर्स्ट" पर पूरा जोर दिए जाने से तथा नाटो की आलोचना किए जाने से यूरो-अटलांटिक संबंधों में अनिश्चितता ला दी थी। गठबंधन के सदस्यों ने यह समझने की कोशिश में धैर्य बनाए रखा कि क्या संयुक्त राज्य अमेरिका वर्तमान प्रशासन के तहत अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था का नेतृत्व करने के लिए प्रतिबद्ध है या नहीं। यह अनुमान लगाया गया था कि नाटो शिखर सम्मेलन के दौरान श्री ट्रम्प अपने विचार व दृष्टिकोण को आगे ले जाएंगे, पर उन्होंने सम्मेलन में यह स्पष्ट किया कि अब उन्हें नहीं लगता कि नाटो प्राचीन है। अपने भाषण के दौरान, उन्होंने आतंकवाद से लड़ने के लिए गठबंधन की आवश्यकता पर जोर दिया था, फिर भी, कई लोगों ने उनकी आलोचना की और उनके भाषण को यूरोपीय नेताओं के लिए एक 'व्याख्यान' करार दिया। चार्टर के अनुच्छेद 5 के लिए प्रतिबद्धता पर कुछ नहीं कहने के बावजूद वह आर्थिक बोझ साझाकरण की आवश्यकता पर निरंतर तनाव पैदा करते रहे और यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच संबंधों में काफी अनिश्चितता पैदा हो गई। यह राष्ट्रपति बराक ओबामा के बिल्कुल विपरीत था जिन्होंने अपने प्रागु भाषण (2009) में कहा था, "हम साझा मूल्यों और साझा इतिहास और हमारे गठबंधन के स्थायी वादे से बंधे हैं। नाटो का अनुच्छेद V स्पष्ट रूप से बताता है: नाटो देशों के किसी पर भी कोई हमला हम सब पर हमला है। यह हमारे समय के लिए और आने वाले संपूर्ण समय के लिए एक

वादा है।" उन्होंने 2010 में नाटो शिखर सम्मेलन में भी यही दोहराया था, "हमारी अनुच्छेद 5 के प्रति प्रतिबद्धता हमारे दृष्टिकोण का केंद्र है।" यही बात उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में नाटो में अपने अंतिम भाषण में की (वारसॉ 2016)। जॉर्ज डब्ल्यू बुश ने वाशिंगटन डीसी 2004 में नाटो एक्सेशन समारोह में अपनी टिप्पणी में कहा था, "... कुछ ने सवाल किया था कि क्या नाटो शीत युद्ध के अंत तक जीवित रह सकता है या उसे रहना चाहिए। तब गठबंधन ने बोस्निया में जातीय संघर्ष को रोककर, और कोसोवो में एक तानाशाह की सेनाओं को हटाकर अपनी ताकत का अहसास करा दिया था। कुछ लोगों ने सोचा कि क्या नाटो 21वीं सदी के नए खतरों से निपटने में सक्षम हो सकता है। उन संदेहों पर 12 सितंबर, 2001 को विराम लगा, जब नाटो ने अपने इतिहास में पहली बार हमारे चार्टर के अनुच्छेद पांच को लागू किया। इस अनुच्छेद में कहा गया है कि "किसी भी नाटो सहयोगी के खिलाफ कोई भी हमला हम सभी के खिलाफ हमला है। नाटो का मुख्य मिशन अभी भी वही है - अर्थात किसी भी आक्रामकता के खिलाफ अपने सदस्यों की रक्षा करना।" इसी प्रकार की एक संवेदना राष्ट्रपति विलियम (बिल) जे. क्लिंटन द्वारा व्यक्त की गई थी जब उन्होंने टिप्पणी की थी (1996), "हमारी आम सुरक्षा का आधार नाटो है। ... नाटो को संगत बनाने के लिए हमने अपने सदस्यों के क्षेत्र से परे के मिशनों पर पहली बार कार्य करना शुरु कर दिया है, और ऐसा हमने गैर-सदस्य देशों के सहयोग से किया भी है। हमने अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन कर उन छोटे एवं उदारवादी देशों के साथ कार्य करने पर जोर दिया है जो हमारे रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं और शांति व्यवस्था कायम करने में प्रशिक्षित एवं साज-सज्जा से सशक्त हैं।"

चांसलर एंजेला मर्केल की हालिया टिप्पणी, "हम यूरोपीय लोगों को वास्तव में अपने भाग्य को अपने हाथों में ही रखें - बेशक संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ, ग्रेट ब्रिटेन के साथ और अच्छे पड़ोसियों के रूप में जहां भी संभव है अन्य देशों के साथ और रूस के साथ भी हमारी दोस्ती क्यों न हो" को हाल ही में नाटो शिखरवार्ता के परिणाम-स्वरूप देखा जा रहा है। उन्होंने ब्रसेल्स में छात्रों से एक बातचीत के दौरान जनवरी 2017 में इसी तरह की टिप्पणी की थी, "मुझे विश्वास है कि यूरोप और यूरोपीय संघ को भविष्य में दुनिया में अधिक जिम्मेदारी लेना सीखना चाहिए... हमारे कुछ पारंपरिक सहयोगियों के दृष्टिकोण से, और मैं ट्रान्सअटलांटिक संबंधों के बारे में सोच रही हूं कि हम यूरोपीय लोगों के साथ घनिष्ठ सहयोग की सदा के लिए कोई गारंटी नहीं है। हमें उस समय भी कार्य करना जारी रखना होगा ...." यूरोपीय संघ के संस्थापक सदस्य के रूप में, उनके शब्दों को एक संकेत के रूप में देखा जा रहा है कि यूरोपीय संघ को संयुक्त राज्य अमेरिका के अलावा अपनी सुरक्षा को बढ़ाने की आवश्यकता होगी।

यूरोप भी रूस के साथ राष्ट्रपति ट्रम्प के संबंधों के बारे में चिंतित रहा है, विशेष रूप से यूक्रेन में रूस की 2014 की सैन्य भागीदारी और क्रीमिया के अधिग्रहण के बाद रूस पर लगाए गए प्रतिबंध। पूर्व एफबीआई निदेशक रॉबर्ट मुलर को ट्रम्प के चुनाव अभियान और रूस के बीच संबंधों का विवेचन करने हेतु न्याय विभाग के विशेष काउंसिल के रूप में नियुक्त किया गया है। उनके विशेष सलाहकार, श्री जेरेड कुशनर भी अब जांच के दायरे में हैं। राष्ट्रपति ट्रम्प की आलोचना व्हाइट हाउस में रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव के साथ बैठक के दौरान आईएसआईएल पर वर्गीकृत जानकारी साझा करने के लिए भी की गई। उन पर आलोचना इस आधार पर की गई कि जानकारी एक साझेदार देश की खुफिया एजेंसी को विश्वास में लेकर साझा की गई थी। अमेरिकी प्रशासन को मैनचेस्टर शहर के हमले के संबंध में यूनाइटेड किंगडम द्वारा साझा की गई खुफिया जानकारी के लीक होने के लिए भी आलोचना का सामना करना पड़ रहा है। प्रधानमंत्री टेरेसा मे ने कहा, "हमारे संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ मजबूत संबंध हैं, जो हमारे सबसे करीबी साथी हैं, और यह निश्चित रूप से विश्वास की दीवार पर टिका हुआ है। इस विश्वास का एक भाग यह समझना है कि खुफिया जानकारी गोपनीय रूप से साझा की जा सकती है, और मैं राष्ट्रपति ट्रम्प को स्पष्ट कर दूंगी कि कानून प्रवर्तन के साथ साझा की गई खुफिया जानकारी गोपनीय एवं परिरक्षित हो।'' ऐसी रिपोर्ट प्राप्त की गई थी कि ब्रिटिश खुफिया ने सूचना साझा करने पर निलंबन लगा दिया है जिसके पीछे उसने यह कारण बताया कि सयुंक्त राज्य अमेरिका से लीक हुई सूचनाओं से जांच प्रभावित हो सकती है। राष्ट्रपति ट्रम्प ने लीक की जांच करने के लिए एक जांच का आदेश दिया है जिसे न्याय विभाग द्वारा किया जाना है।

यह कहा गया है कि नाटो नेताओं की शिखरवार्ता में किसी भी सरकार के प्रमुख की पहली यात्रा अपने समकक्षों से मिलने और गठबंधन के कामकाज को समझने का अवसर है। लेकिन राष्ट्रपति ट्रम्प ने मिश्रित प्रतिक्रियाएँ रखीं। हालांकि कुछ टिप्पणीकारों ने कहा कि वह अपनी बात पर अडिग हैं और उनके विचार अपेक्षित बिंदुओं पर थे, वहीं दूसरों को लगता है कि वह प्रमुख मुद्दों पर संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप के विचारों के बीच की खाई को पाटने में असमर्थ रहे। राष्ट्रपति ट्रम्प और यूरोप के बीच व्यापार से लेकर जलवायु परिवर्तन तक के मुद्दों पर विचारों में भिन्नता है। राष्ट्रपति ट्रम्प ने घोषणा की है कि संयुक्त राज्य अमेरिका अब जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौते का हिस्सा नहीं होगा। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि, "अमेरिका और उसके नागरिकों की सुरक्षा के लिए मेरे एकमात्र कर्तव्य को पूरा करने के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका पेरिस जलवायु समझौते से हट जाएगा लेकिन पेरिस समझौते या फिर पूरी तरह से नए ट्रांजेक्शन में फिर से प्रवेश करने के लिए हमें बातचीत शुरू करनी चाहिए, बशर्ते कि ट्रांजेक्शन संयुक्त राज्य अमेरिका, उसके व्यवसायों, उसके श्रमिकों, उसके लोगों, उसके करदाताओं के लिए

उचित हो। इसलिए हम बाहर निकल रहे हैं, लेकिन हम बातचीत करना शुरू करेंगे, और हम देखेंगे कि क्या हम कथित ट्रांजेक्शन को उचित बना सकते हैं। और अगर हम ऐसा कर सकते हैं, तो यह बहुत अच्छा होगा। और अगर हम उसे ठीक नहीं कर सकते हैं, तो वह भी अच्छा ही होगा।" अपने संयुक्त प्रेस बयान में, जर्मनी, फ्रांस और इटली के नेताओं ने कहा, "हम दिसंबर 2015 में पेरिस में सृजित गति को अपरिवर्तनीय मानते हैं और हम दृढ़ता से मानते हैं कि पेरिस समझौता पर दोबारा कोई बातचीत नहीं हो सकती है, क्योंकि यह हमारे ग्रह, समाज और अर्थव्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है।"

तथापि, ट्रांस-अटलांटिक संबंधों को केवल नाटो या सुरक्षा संबंधों के सीमित दृश्य के साथ देखना गलत होगा। संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप विभिन्न सरकारी विभागों के माध्यम से शरणार्थियों, सीमा-गश्त, बेहतर पुलिसिंग, मानवाधिकारों पर साझा विचार आदि जैसे मुद्दों पर एक-दूसरे के साथ सहयोग करते हैं। हमारे संबंधों में एक खाई किसी के भी हित में नहीं होगी। संबंधों को आगे ले जाने के लिए दोनों को आम जमीन तलाशनी होगी और संबंधों को फिर से मजबूत बनाने में सहयोग करना होगा।

***

डॉ.स्तुति बनर्जी, भारतीय विश्व मामले परिषद, नई दिल्ली में अध्येता हैं

*

अस्वीकरण: व्यक्त मंतव्य लेखक के हैं और परिषद के मंतव्यों को परिलक्षित नहीं करते।

पादटिप्पणियां:

1 NATO, "Basic Points," http://www.nato.int/nato-welcome/index.html, 05 मई 2017 को अभिगम्य.

2 NATO, "The North Atlantic Treaty," http://www.nato.int/nato_static/assets/pdf/stock_publications/20120822_nato_treaty_en_light_2009.pdf, 05 जून 2017 को अभिगम्य.

3 पूर्वोक्त

4 पूर्वोक्त

5 Article 51 of the Charter of the United Nations: Nothing in the present Charter shall impair the inherent right of individual or collective self-defence if an armed attack occurs against a Member of the United Nations, until the Security Council has taken measures necessary to maintain international peace and security. Measures taken by Members in the exercise of this right of self-defence shall be immediately reported to the Security Council and shall not in any way affect the authority and responsibility of the Security Council under the present Charter to take at any time such action as it deems necessary in order to maintain or restore international peace and security.

6 The Strategic Concept is an official document that outlines NATO's enduring purpose and nature and its fundamental security tasks. It also identifies the central features of the new security environment, specifies the elements of the Alliance's approach to security and provides guidelines for the adaptation of its military forces. http://www.nato.int/cps/sl/natohq/official_texts_23847.htm. पर उपलब्ध

7 NATO, "The Alliance's New Strategic Concept," http://www.nato.int/cps/sl/natohq/official_texts_23847.htm, 05 जून 2017 को अभिगम्य.

8 पूर्वोक्त

9 पूर्वोक्त

10 http://www.nato.int/cps/sl/natohq/official_texts_27433.htm पर उपलब्ध

11 http://www.nato.int/cps/sl/natohq/official_texts_68580.htm पर उपलब्ध

12 NATO, "Active Engagement, Modern Defence Strategic Concept for the Defence and Security of the Members of the North Atlantic Treaty Organization," http://www.nato.int/strategic-concept/pdf/Strat_Concept_web_en.pdf, 05 जून 2017 को अभिगम्य.

13 NATO, "Warsaw Summit Communiqué," http://www.nato.int/cps/en/natohq/official_texts_133169.htm, 05 जून 2017 को अभिगम्य.

14 http://nuclearfiles.org/menu/key-issues/nuclear-weapons/issues/nato-nuclear-policies/1949-11-28_a491128a_nato_int.pdf पर उपलब्ध

15 Dr. Gregory W. Pedlow, "The Evolution Of NATO Strategy 1949-1969," http://www.nato.int/docu/stratdoc/eng/intro.pdf, 12 जून 2017 को अभिगम्य, पृष्ठ xviii

16 NATO, "Active Engagement, Modern Defence: Strategic Concept for the Defence and Security of the Members of the North Atlantic Treaty Organization", 2010, http://www.nato.int/strategic-concept/pdf/Strat_Concept_web_en.pdf, 12 जून 2017 को अभिगम्य.

17 NATO, "NATO's Position Regarding Nuclear Non-Proliferation, Arms Control and Disarmamen and related issues,"
http://www.nato.int/nato_static/assets/pdf/pdf_topics/20091022_NATO_Position_on_nuclear_nonproliferation-eng.pdf, 12 जून 2017 को अभिगम्य.

18 NATO, "Short History of NATO," http://www.nato.int/nato_static/assets/pdf/pdf_publications/20120412_ShortHistory_en.pdf, 05 जून 2017 को अभिगम्य.

19 पूर्वोक्त

20 पूर्वोक्त

21 NATO Parliamentary Assembly, "168 DSC 05 E - NATO'S OUT-OF-AREA OPERATIONS," http://www.nato-pa.int/Default.asp?SHORTCUT=670, 05 जून 2017 को अभिगम्य.

22 NATO, "Cyber defence," http://www.nato.int/cps/en/natohq/topics_78170.htm, 05 जून 2017 को अभिगम्य.

23 James M. Goldgeier, The Council of Foreign Policy, "The Future of NATO,", https://www.cfr.org/sites/default/files/pdf/2009/12/NATO_CSR51.pdf, 16 मई 2017 को अभिगम्य, पृष्ठ 06

24 Walter B. Slocombe, "Towards A New NATO Strategic Concept A View from the United States," http://library.fes.de/pdf-files/id/ipa/07299.pdf, 15 मई 2017 को अभिगम्य.

25 US Mission to the North Atlantic Treaty Organisation, "Why NATO Matters," https://nato.usmission.gov/our-relationship/why-nato-matters/, 05 मई 2017 को अभिगम्य.

26 US Department of Defence, "Sustaining US Global Leadership: Priorities for 21st Century Defence," http://archive.defense.gov/news/Defense_Strategic_Guidance.pdf, 16 मई 2017 को अभिगम्य, पृष्ठ 01 &04.

27 The Washington Post, "A transcript of Donald Trump's meeting with The Washington Post editorial board," https://www.washingtonpost.com/blogs/post-partisan/wp/2016/03/21/a-transcript-of-donald-trumps-meeting-with-the-washington-post-editorial-board/?utm_term=.84c3b1c3ae45, 22 मई 2017 को अभिगम्य.

28 The New York Times, "Transcript: Donald Trump Expounds on His Foreign Policy Views," https://www.nytimes.com/2016/03/27/us/politics/donald-trump-transcript.html?_r=0, 22 मई 2017 को अभिगम्य.

29 Ashley Parker, "Donald Trump Says NATO is 'Obsolete,' UN is 'Political Game'," https://www.nytimes.com/politics/first-draft/2016/04/02/donald-trump-tells-crowd-hed-be-fine-if-nato-broke-up/, 22 मई 2017 को अभिगम्य.

30 The Times, "Full transcript of interview with Donald Trump," https://www.thetimes.co.uk/article/full-transcript-of-interview-with-donald-trump-5d39sr09d, 22 मई 2017 को अभिगम्य.

31 The Office of the Press Secretary, "Remarks by President Trump to Coalition Representatives and Senior U.S. Commanders," https://www.whitehouse.gov/the-press-office/2017/02/06/remarks-president-trump-coalition-representatives-and-senior-us, 22 मई 2017 को अभिगम्य.

32 The Office of the Press Secretary, The White House, "Remarks by the Vice President at the Munich Security Conference," https://www.whitehouse.gov/the-press-office/2017/02/18/remarks-vice-president-munich-security-conference, 22 मई 2017 को अभिगम्य.

33 Transcript available at https://www.apnews.com/c810d7de280a47e88848b0ac74690c83

34 Colonel Patrick T. Warren, "Alliance History and the Future NATO: What the Last 500 Years of Alliance Behavior Tells Us about NATO's Path Forward," https://www.brookings.edu/wp-content/uploads/2016/06/0630_nato_alliance_warren.pdf, 23 मई 2017 को अभिगम्य.

35 NATO, "Funding NATO," http://www.nato.int/cps/ro/natohq/topics_67655.htm, 22 मई 2017 को अभिगम्य.

36 पूर्वोक्त

37 The Office of the Press Secretary, The White House, "President Trump's Speech to the Arab Islamic American Summit," https://www.whitehouse.gov/the-press-office/2017/05/21/president-trumps-speech-arab-islamic-american-summit, 22 मई 2017 को अभिगम्य.

38 The Office of the Press Secretary, The White House, "Remarks by President Trump at NATO Unveiling of the Article 5 and Berlin Wall Memorials - Brussels, Belgium," https://www.whitehouse.gov/the-press-office/2017/05/25/remarks-president-trump-nato-unveiling-article-5-and-berlin-wal 26 मई 2017 को अभिगम्य.

39 पूर्वोक्त

40 US Department of Defence, "Remarks by Secretary Mattis and Secretary-General Stoltenberg at NATO Headquarters, Brussels, Belgium," https://www.defense.gov/News/Speeches/Speech-View/Article/1085050/remarks-by-secretary-mattis-and-secretary-general-stoltenberg-at-nato-headquart/, 13 जून 2017 को अभिगम्य.

41 US Department of Defence, "The NATO-E.U. joint declaration signed in Warsaw reflects the reality that American security is permanently tied to the security of Europe," https://www.defense.gov/News/Speeches/Speech-View/Article/1087838/remarks-by-secretary-mattis-at-the-munich-security-conference-in-munich-germany/, 13 जून 2017 को अभिगम्य.

42 US Department of State, "NATO Foreign Ministerial Intervention Remarks," https://www.state.gov/secretary/remarks/2017/03/269339.htm, 13 जून 2017 को अभिगम्य.

43 H.R. MacMaster and Gary D. Cohen, " America First Doesn't Mean America Alone," https://www.wsj.com/articles/america-first-doesnt-mean-america-alone-1496187426, 12 जून 2017 को अभिगम्य.

44 Office of the Press Secretary, The White House, "Remarks by President Trump and President Iohannis of Romania in a Joint Press Conference," https://www.whitehouse.gov/the-press-office/2017/06/09/remarks-president-trump-and-president-iohannis-romania-joint-press, 12 जून 2017 को अभिगम्य.

45 Philip Rucker, Karen DeYoung and Michael Birnbaum, "Trump chastises fellow NATO members, demands they meet payment obligations," https://www.washingtonpost.com/politics/trump-told-in-brussels-that-west-should-focus-on-values-not-only-interests/2017/05/25/7aa1865c-40cd-11e7-9869-bac8b446820a_story.html?utm_term=.11133b0f84e0, 26 मई 2017 को अभिगम्य.

46 Office of the Press Secretary, The White House President Barack Obama, "Remarks By President Barack Obama In Prague As Delivered," https://obamawhitehouse.archives.gov/the-press-office/remarks-president-barack-obama-prague-delivered, 05 जून 2017 को अभिगम्य.

47 Office of the Press Secretary, The White House President Barack Obama, "Remarks by the President on the NATO Summit and the New START Treaty," https://obamawhitehouse.archives.gov/the-press-office/2010/11/19/remarks-president-nato-summit-and-new-start-treaty, 07 जून 2017 को अभिगम्य.

48 NATO, "Remarks by US President George W. Bush at the NATO Accession Ceremony in Washington D.C., USA," http://www.nato.int/cps/en/natohq/opinions_21295.htm?selectedLocale=en, 07 जून 2017 को अभिगम्य.

49 NATO, "Transcript of the Remarks by President W. J. Clinton To People Of Detroit," http://www.nato.int/docu/speech/1996/s961022a.htm, 07 जून 2017 को अभिगम्य.

50 Reuters and The Week, "After summits with Trump, Merkel says Europe 'can't rely on allies," http://www.theweek.in/news/world/donald-trump-angela-merkel-g7-europe.html, 05 जून 2017 को अभिगम्य.

51 Reuters, "Germany's Merkel says EU must boost security cooperation, funding," http://www.reuters.com/article/us-germany-merkel-europe-idUSKBN14W2P6 , 05 जून 2017 को अभिगम्य.

52 Op. Cit 45 Philip Rucker, Karen DeYoung and Michael Birnbaum,.

53 पूर्वोक्त

54 The Office of the Press Secretary, The White House, "Statement by President Trump on the Paris Climate Accord," https://www.whitehouse.gov/the-press-office/2017/06/01/statement-president-trump-paris-climate-accord , 07 जून 2017 को अभिगम्य.

55 Reuters, "France, Italy, Germany defend Paris Accord, say cannot be renegotiated," https://www.reuters.com/article/usa-climatechange-eu-idUSR1N1HQ00E, 07 जून 2017 को अभिगम्य.

अनुलग्नक

उत्तरी अटलांटिक संधि (वाशिंगटन डी.सी. - 4 अप्रैल 1949)

इस संधि की पार्टियों ने संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के उद्देश्यों और सिद्धांतों पर अपना विश्वास पुन: जताया और सभी लोगों और सभी सरकारों के साथ शांति से रहने की इच्छा व्यक्त की।

वे अपने लोकतंत्र, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और कानून व्यवस्था के सिद्धांतों के आधार पर अपने लोगों की स्वतंत्रता, साझी विरासत और सभ्यता की रक्षा के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। वे उत्तरी अटलांटिक क्षेत्र में स्थिरता और कल्याण को बढ़ावा देना चाहते हैं।

उन्होंने सामूहिक रक्षा और शांति एवं सुरक्षा के संरक्षण के लिए अपने प्रयासों को एकजुट करने का संकल्प लिया है। इसलिए वे इस उत्तर अटलांटिक संधि से सहमत हैं:

अनुच्छेद 1

संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के अनुसार पार्टियां यह सहमति व्यक्त करती हैं कि वे किसी भी अंतर्राष्ट्रीय विवाद को ऐसी शांतिपूर्ण प्रक्रिया के जरिए निपटाएंगे कि अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा और न्याय खतरे में न पड़ें, और हम संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों के अनुरूप किसी भी प्रकार से कोई खतरे या बल के उपयोग के द्वारा अपने अपने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर आंच नहीं आने देंगे।

अनुच्छेद 2

पार्टियां अपने सार्वजनिक संस्थानों को मजबूत कर और उन सिद्धांतों के बारे में बेहतर समझ आवश्वस्त कर (जिन पर इन संस्थानों की स्थापना की जाती है), और स्थिरता और कल्याण के माहौल को बढ़ावा देकर, शांतिपूर्ण और मैत्रीपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के विकास में योगदान देंगे। वे अपनी अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक नीतियों में संघर्ष को खत्म करने की कोशिश करेंगे और आपस में किसी भी एक या सभी के बीच आर्थिक सहयोग को प्रोत्साहित करेंगे।

अनुच्छेद 3

इस संधि के उद्देश्यों को और अधिक प्रभावी ढंग से प्राप्त करने के लिए, पार्टियां निरंतर और प्रभावी स्व-सहायता और पारस्परिक सहायता के माध्यम से अलग-अलग और संयुक्त रूप से सशस्त्र हमले का विरोध करने के लिए अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक क्षमता को कायम रखेंगे।

अनुच्छेद 4

पार्टियां तब एक दूसरे से परामर्श करेंगी जब भी किसी की राय में, क्षेत्रीय अखंडता, राजनीतिक स्वतंत्रता या किसी भी पार्टियां की सुरक्षा को खतरा हो।

अनुच्छेद 5

पार्टियां इस बात से सहमत हैं कि यूरोप या उत्तरी अमेरिका में किसी भी एक पार्टी या उससे अधिक के खिलाफ किए गए सशस्त्र हमले को सभी पार्टियों के खिलाफ हमला माना जाएगा और इसके परिणामस्वरूप वे इस बात से सहमत हैं कि, अगर ऐसा सशस्त्र हमला होता है, तो उनमें से प्रत्येक, संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के अनुच्छेद 51 द्वारा मान्यता प्राप्त सामूहिक या व्यक्तिगत आत्मरक्षा व्यक्ति के अधिकार का प्रयोग करते हुए, उत्तरी अटलांटिक क्षेत्र की सुरक्षा को बहाल करने और बनाए रखने के लिए सशस्त्र बल का उपयोग करने सहित यथाआवश्यकता अन्य पार्टियों के साथ सामूहिक एवं व्यक्तिगत रूप से तत्काल कार्रवाई कर सहायता करेगी।

इस तरह के किसी भी सशस्त्र हमले और उसके परिणामस्वरूप किए गए सभी उपायों को तुरंत सुरक्षा परिषद को सूचित किया जाएगा। ऐसे उपायों को तब समाप्त किया जाएगा जब सुरक्षा परिषद ने अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बहाल करने और बनाए रखने के लिए आवश्यक उपाय स्वयं किए हैं।

अनुच्छेद 6

अनुच्छेद 5 के प्रयोजनार्थ, एक या एक से अधिक पार्टियों पर हथियारों के साथ किए गए हमले को:

यूरोप या उत्तरी अमेरिका में किसी भी पार्टी के क्षेत्र पर; फ्रांस 2 के अल्जीरियाई विभागों पर, कर्क रेखा के उत्तर के उत्तर अटलांटिक क्षेत्र में किसी भी पार्टी के अधिकार क्षेत्र के तहत या द्वीपों पर;

किसी भी पार्टी की सेनाओं, जहाजों, या विमानों पर (जब वे इन क्षेत्रों या यूरोप के किसी अन्य क्षेत्र में मौजूद थे जिसमें किसी भी पार्टी के ऑक्युपेशन फोर्स उस तारीख में तैनात थे जिस दिन संधि लागू हो गई थी) या भूमध्य सागर में या उत्तरी अटलांटिक क्षेत्र कर्क रेखा के उत्तर में तैनात थे,

उसे सशस्त्र हमला माना जाता है।

अनुच्छेद 7

यह संधि उन पार्टियों, जो संयुक्त राष्ट्र के सदस्य हैं, के चार्टर के तहत अधिकारों और दायित्वों को या अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के रखरखाव के लिए सुरक्षा परिषद की प्राथमिक जिम्मेदारी को किसी भी तरह से न तो प्रभावित करेगी, और न ही उसका इस प्रकार कोई निर्वचन किया जाएगा।

अनुच्छेद 8

प्रत्येक पार्टी यह घोषणा करती है कि वर्तमान में उसके और किसी अन्य पार्टी या किसी तीसरे देश के बीच लागू की गई कोई भी अंतर्राष्ट्रीय संधि इस संधि के प्रावधानों के विपरीत नहीं है, और पार्टी यह वचन देती है कि वह इस संधि से उत्पन्न किसी विवाद के लिए किसी भी अंतर्राष्ट्रीय हस्तक्षेप का सहारा नहीं लेगी।

अनुच्छेद 9

संधि से जुड़ी पार्टियां एतदद्वारा एक परिषद की स्थापना करती हैं, जिसमें उनमें से प्रत्येक का इस संधि के कार्यान्वयन से संबंधित मामलों पर विचार-विमर्श करने हेतु प्रतिनिधित्व होगा। परिषद की बैठकें इस प्रकार आयोजित की जाएंगी जिससे कि वह किसी भी समय पर तुरंत बैठक कर सके। परिषद ऐसे सहायक निकायों की स्थापना करेगी, जो आवश्यक हों; विशेष रूप से वह तुरंत एक रक्षा समिति की स्थापना करेगी जो अनुच्छेद 3 और 5 के कार्यान्वयन के लिए उपयुक्त उपायों की सिफारिश करेगी।

अनुच्छेद 10

पार्टियां सर्वसम्मति से इस संधि के सिद्धांतों को आगे बढ़ाने के लिए और इस संधि को स्वीकार करने के लिए उत्तरी अटलांटिक क्षेत्र की सुरक्षा में योगदान देने हेतु किसी अन्य यूरोपीय राज्य को आमंत्रित कर सकती हैं। कोई भी आमंत्रित देश संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार के पास अपनी अधिमिलन लिखत जमा करवाकर इस संधि की एक पार्टी बन सकता है। संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार प्रत्येक पार्टी को अपनी अधिमिलन लिखत को जमा करने के लिए सूचित करेगी।

अनुच्छेद 11

इस संधि का अनुसर्मथन किया जाएगा और पार्टियों द्वारा अपने संबंधित संवैधानिक प्रक्रियाओं के अनुसार उसके लिए प्रावधान किए जाएंगे। अनुसमर्थन लिखतें यथाशीघ्र संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार के पास जमा की जाएंगी, जो प्रत्येक जमा के अन्य सभी हस्ताक्षरकर्ताओं को सूचित करेगी। यह संधि उन देशों के बीच लागू होगी जिन्होंने इसका शीघ्र अनुसर्मथन किया है। इन देशों में बेल्जियम, कनाडा, फ्रांस, लक्ज़मबर्ग, नीदरलैंड, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका हैं। अन्य देशों के संबंध में यह संधि उस दिन से लागू होगी जब वे अपनी अधिमिलन की लिखत जमा करेंगे तथा संधि का अनुसमर्थन करेंगे।

अनुच्छेद 12

दस वर्षों तक संधि लागू होने के बाद, या उसके बाद किसी भी समय, पक्षकार, यदि उनमें से कोई भी अनुरोध करता है तो उन सभी कारकों, जो उत्तर अटलांटिक क्षेत्र में शांति और सुरक्षा सहित अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के रखरखाव के लिए संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के तहत सार्वभौमिक और क्षेत्रीय व्यवस्थाओं के विकास को प्रभावित कर रहे हों, के समीक्षा के प्रयोजनार्थ एक साथ बैठकर परमर्श किया जाएगा।

अनुच्छेद 13

बीस साल तक संधि लागू होने के बाद, कोई भी पार्टी संयुक्त राज्य अमेरिका को एक साल का नोटिस देकर खुद को संधि से अलग कर सकता है। संधि से अलग होने वाले प्रत्येक देश के बारे में और उसके जमा लिखत के बारे में संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार अन्य पार्टियों को सूचित करेगी।

अनुच्छेद 14

यह संधि, जिसमें अंग्रेजी और फ्रेंच टेक्सट समान रूप से प्रामाणिक हैं, संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार के अभिलेखागार में जमा की जाएगी। अमेरिकी सरकार द्वारा विधिवत प्रमाणित प्रतियां अन्य हस्ताक्षरकर्ताओं की सरकारों को प्रेषित की जाएंगी।

जिन क्षेत्रों पर अनुच्छेद 5 लागू होता है, उनकी परिभाषा को 22 अक्टूबर 1951 को हस्ताक्षरित ग्रीस और तुर्की के अधिमिलन पर उत्तरी अटलांटिक संधि के प्रोटोकॉल के अनुच्छेद 2 द्वारा संशोधित किया गया था।

16 जनवरी, 1963 को, उत्तरी अटलांटिक परिषद ने उल्लेख किया कि जहां तक फ्रांस के पूर्व अल्जीरियाई विभागों का प्रश्न है, इस संधि के संबद्ध खंड 3 जुलाई, 1962 से लागू नहीं होंगे।

संधि पर हस्ताक्षर करने वाले सभी देशों द्वारा उसके अनुसमर्थन देने के बाद संधि 24 अगस्त 1949 को लागू हुई।